International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 14 Issue 10, Oct 2024,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

# भारत के 'राष्ट्र प्रथम' की विदेश नीति के सन्दर्भ में भारत–अमेरिका सम्बन्ध

**श्री दुर्गेश कुमार त्रिपाठी**
**असिस्टेन्ट प्रोफेसर (राजनीति विज्ञान)**
**राजकीय महाविद्यालय, ढाढ़ा बुजुर्ग, हाटा, कुशीनगर (उ0प्र0)**

**सारांश (Abstract)** – भारत अपने राष्ट्रीय हितों को प्रत्येक स्थिति में न केवल अक्षुण्य बनाए रखना चाहता है बल्कि अनिवार्य रूप से उसके संवर्द्धन के प्रति कटिबद्ध है। भारत की राष्ट्रीय हित के संबंध में इस प्रतिबद्धता को 'राष्ट्र प्रथम' (National First) के विदेशनीति के सिद्धान्त के रूप में जाना जाता है। जहाँ तक प्रश्न विदेश नीति के अनुपालन और भारत–अमेरिका के मध्य संबंध की है तो भारत आरम्भ से ही अमेरिका के साथ सम्बन्धों के संचालन में इस नीति का सदैव ध्यान रखा है। भारत की गुटनिरपेक्षता की नीति इसका उत्कृष्ट उदाहरण है। इसके अलावा शीत युद्ध के समाप्ति के पश्चात् जब भारत–अमेरिका रिश्तों में नजदीकियाँ आनी आरम्भ हुई और दोनों देशों के सम्बन्ध में न केवल व्यापक हुए बल्कि गहरे भी हुए उस समय में भी भारत ने अपने हितों से कोई समझौता नहीं किया। 21वीं सदी के उभरते हुए मुद्दों ने अमेरिका और भारत के समक्ष एक चुनौती पैदा की तो इस समय की आर्थिक के साथ सामरिक एवं रणनीतिक आवश्यकताओं ने दोनों देशों को आने के लिए विवश किए परन्तु इस समय भी भारत अपने राष्ट्र प्रथम की विदेश नीति पर अडिग रहा। व्यापारिक रिश्ते, परमाणु मसला, मानवाधिकार, जलवायु सकट आदि प्रश्न पर दोनों देशों के मध्यभेद होने के बावजूद भारत ने अपने राष्ट्रीय हितों से कभी समझौता नहीं किया। प्रस्तुत शोध–पत्र भारत की राष्ट्र प्रथम की विदेश नीति के अनुपालन का एक अनुशीलन प्रस्तुत करता है।

**मुख्य शब्दावली (Key Word)** – राष्ट्र प्रथम, शीत युद्ध, गुटनिरपेक्षता, निर्धारक तत्व, उदारीकरण, क्वाड, इनोवेशन ब्रिज, सी0टी0बी0टी0, एफ0डी0आई0 ।

**परिचय (Introduction)** - विदेश नीति के माध्यम से प्रत्येक देश अपने राष्ट्रीय हित तथा सुरक्षा सुनिश्चित करता है। भारत भी इसी तरह अपने विदेश नीति को अपने राष्ट्रीय हिता की सुरक्षा को दृष्टिगत रखते हुए निर्धारित एवं लागू करता है। अपने राष्ट्रीय हितों को ध्यान में रखते हुए वैश्विक क्षितिज पर प्रत्येक देश अन्य देशों की गतिविधियों का अधिकतम लाभ उठाना चाहता हैं विदेश नीति के संदर्भ में यह कहा जाता है कि किसी देश का कोइ देश न तो स्थाई मित्र होता है और न ही स्थाई शत्रु होता है बल्कि स्थाई उस राष्ट्र के 'राष्ट्रीय हित' होते है। भारत की विदेश नीति पर यद्यपि देश की भौगोलिक स्थिति, इतिहास, परम्परा एवं संस्कृत का गहरा प्रभाव है परन्तु फिर भी अन्य देशों की अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियाँ भी भारत की विदेश नीति को प्रभावित करती रही है।

स्वतंत्रता के उपरान्त दुनिया शीत युद्ध से प्रभावित थी। विश्व परस्पर दो विरोधी गुटों में विभाजित हो गया था। भारत ने ऐसी स्थिति में गुटनिरपेक्षता (NAM) की नीति को अपने विदेश नीति का आधार बनाया। तमाम उतार–चढ़ाव के साथ 1990 के दशक के उपरान्त भारतीय विदेश नीति में उल्लेखनीय परिवर्तन आता है। महाशक्तियों के सन्दर्भ में भारत गुटनिरपेक्षता की नीति में शिथिलता लाता है और संयुक्त राज्य अमेरिका से भारत के रिश्ते पहले की तुलना में मजबूत होना आरम्भ होते हैं। शीत युद्ध काल में भारत–अमेरिकी सम्बन्धों में पाकिस्तान, चीन तथा भूतपूर्व सोवियत संघ निर्धारक तत्व के रूप में रहे परन्तु शीत युद्ध के उपरान्त जैसे–जैसे अन्तर्राष्ट्रीय जगत में वैश्वीकरण की भूमिका बढ़ती

गयी, भारत ने उदारीकरण (Liberalisation) की अपनाया और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर नए मुद्दे उभर कर सामने आए वैसे–वैसे दोनों देशों के मध्य सम्बन्धों में नए मोड़ आने आरम्भ हो गए। अमेरिकी राष्ट्रपति बिल क्लिंटन की भारत यात्रा WTC पर हमले के बाद आतंकवाद का वैश्विक समस्या के रूप में उभरना, पाकिस्तान की अहमियत कम होना। दोनों देशों के रिश्तों में सुधार के आधार स्तम्भ बने। दोनों देशों के मध्य 'विजन पत्र 2000' नामक दस्तावेज पर समझौता हुआ जिसमें सकारात्मक रिश्ते की आधारशिला को आगे चलकर वाजपेई जी ने अमेरिका की यात्रा की तो कश्मीर मुद्दे पर अमेरिका के रूख मे नर्मी आयी। यहाँ पर यह स्पष्ट रहा कि भारतीय विदेश नीति में भारत के राष्ट्रीय हित ही भारत के लिए प्राथमिक रहे। चाहे परमाणु मद्दा की बात हो तो भारत ने CTBT पर हस्ताक्षर नहीं किया परन्तु भारत अपने शर्त 2005 में नाभिकीय ऊर्जा समझौता किया। मनमोहन सिंह के समय में ओबामा प्रशासन ने ाारत के लिए सुरक्षा परिषद की सहायता हेतु अमेरिकी समर्थन की घोषणा भी कर दी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के समय में भारत–अमेरिका का सम्बन्ध सामरिक तथा रणनीतिक रूप से काफी मजबूत हुआ है। परन्तु इस घनिष्ठ होते सम्बन्ध में भारत पथम के विचार को हमेशा केन्द्र में मोदी प्रशासन ने रखा। इस तरह स्पष्ट है कि आरम्भ से लेकर अभी तक भारत–अमेरिका के मध्य सम्बन्धों में उतार–चढ़ाव रहे हैं आज भारत का अमेरिका के साथ द्विपक्षीय संबंध काफी विकसित हो चुका है। भारत कई प्रकार के चुनौतियों के बावजूद अपने विदेश नीति का क्रियान्वयन भारत प्रथम नीति के आधार पर ही किया है।

**सुरक्षा और सामरिक हित** – भारतीय अमेरिकी सम्बन्धों में राष्ट्र प्रथम की नीति विशेष रूप से सुरक्षा के सन्दर्भ में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। भारत को 1947 के विभाजन के बाद कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा। भारत ने अपने सामरिक हितों को सुरक्षित रखने के लिए रक्षा, आतंकाद और सीमाओं की सुरक्षा पर विशेष ध्यान केन्द्रित किया है। भारत–अमेरिका के सेनाओं के साथ व्यापक द्विपक्षीय सैन्य अभ्यास में शामिल होता रहा है इसमें 'बज्र प्रहार' जसे अभ्यास शामिल हैं। भारत अपने सामरिक हित की पूर्ति के लिए ही 'क्वाड' समूह का सदस्य बनना स्वीकार किया है। उल्लेखनीय है कि क्वाड में अमेरिका, भारत, जापान तथा आस्ट्रेलिया जेसे देश शामिल है। क्वाड का उद्देश्य दक्षिण एशिया में चीन के प्रभुत्व को रोकना है जो भारत के सामरिक विस्तार के लिए अत्यन्त आवश्यक है।

उपरोक्त के क्रम में 12U2 समूह का गठन किया गया है जिसमें भारत के अलावा अमेरिका, इजराइल और संयुक्त अरब अमीरात शामिल है। इसे 'नया क्वाड' भी कहा जाता हैं भारत–अमेरिका हिन्द प्रशांत क्षेत्र में चीनी प्रभाव का मुकाबला करने के लिए मिलकर काम कर रहे है। इसके लिए दोनों देश तकनीकी साझेदारी का सहारा ले रहे हैं। दोनों देश ने ए0आई0 (Artificial Inteligence) अर्थात कृत्रिम बुद्धिमत्ता और वायरलस तकनीकों पर मिलकर शोध करने का अनुबन्ध किये है। दोनों देश ने घोषणा की है कि वे अपने स्टार्टप तंत्रों को तोड़ने के लिए एक नये ''इनावेशन हैण्डशेक'' को शुरू करेंगे। उपरोक्त के अलावा रक्षा तकनीकी के क्षेत्र में दोनों पक्षों ने एक ''इनोवेशन ब्रिज'' (नवाचार के एक सेतु) की घोषणा की है जिससे अमेरिकी तथा भारतीय रक्षा स्टार्टप को जोड़ा जा सकेगा। पिछले वर्ष मोदी की अमेरिका यात्रा के दौरान G.F. 414 इंजन का साझा उत्पादन और MQ-9 B.C. गार्डियन ड्रोज की खरीद्दारी पर सहमति से नई दिल्ली और वाशिंगटन अपनी वैश्विक रणनीतिक साझेदारी को आगे बढ़ाने के लिए दृढ़ संकल्प हैं स्पष्ट है कि भारत–अमेरिका के साथ तकनीकी साझेदारी के जरिये भी अपने रणनीतिक उद्देश्य को पूर्ण करने में लगा हुआ है।

**कश्मीर मुद्दा और सामरिक सुरक्षा** – कश्मीर मुद्दे भारत और पाकिस्तान के बीच एक प्रमुख विवाद है जिसने विदेशनीति पर गहरा असर डाला है। राष्ट्र प्रथम की नीति के तहत भारत ने कश्मीर में अपनी सम्प्रभुता और क्षेत्रीय अखण्डता को सर्वोपरि रखा है। भारत–अमेरिका सम्बन्धों के मध्य कश्मीर मुद्दा एक जटिल पहलू रहा है जिसका प्रभाव दोनों देशों की रणनीतिक प्राथमिकताओं पर पड़ता रहा है। आरम्भ में भारत ने इस सम्बन्ध में अमेरिको दृष्टिकोण को भारत के प्रतिकूल पाया। 90 के दशक में कश्मीर मुद्दे के प्रति अमेरिकी रवैये में कुछ बदलाव आया। 1996 में अमेरिकी राष्ट्रपति बिल क्लिंटन ने

कहा कि ''कश्मीर दुनिया के दो सबसे खतरनाक फ्लैश प्वाइन्ट्स में एक है।'' इस समय तक अमेरिका इसे भारत–पाकिस्तान के बीच का आपसी मुद्दा मानने लगा था। इधर भारत की अर्थव्यवस्था मजबूत हुई, तेज आर्थिक वृद्धि ने भी भारत–अमेरिकी सम्बन्धों में बड़ा बदलाव लाया। इस समय तक अमेरिका कश्मीर का भारत–पाक का द्विपक्षीय मुद्दा मानने लगा था और अब इसमें दखल देने से इनकार करने लगा। उल्लेखनीय है कि पाकिस्तान कश्मीर मुद्दे पर अमेरिकी हस्तक्षेप का हिमायती था और हस्तक्षेप करने की माँग हमेशा अमेरिका से करता रहता था। लेकिन अब अमेरिका पाकिस्तान की इस माँग को खारिज करता रहा है। क्योंकि अमेरिका यह भी जान चुका था कश्मीर का आतंकवाद पाकिस्तान पोषित है और आतंकवाद अब वैश्विक समस्या हो चुका था। इस तथ्य को अमेरिका भी स्वीकार करने लगा था। इसलिए भी अमेरिका कश्मीर मामले में हस्तक्षेप नहीं करना चाहता था और महत्वपूर्ण बात यह है कि भारत हमेशा से यह कहता आया है कि कश्मीर समस्या के समाधान में किसी तीसरे पक्ष की मध्यस्थता स्वीकार नहीं है। इस तरह कश्मीर मुद्दे पर भी भारत नेशन फर्स्ट के सिद्धान्त को ही अपने विदेश नीति का आधार बनाया है।

**आतंकवाद का मुद्दा** – भारत और अमेरिका के बीच द्विपक्षीय सम्बन्धों में आतंकवाद का मुद्दा हमेशा एक महत्वपूर्ण कारक रहा है। दोनों देश आतंकवाद को एक गम्भीर खतरे के रूप में देखते हैं और इस मुद्दे पर सहयोग करने के लिए प्रतिबद्ध है। भारत और अमेरिका दोनों देश आतंकवाद के कारण काफी क्षति झेल चुके है। भारत पर कई आतंकवादी हमले हुए हैं जबकि अमेरिका 9/11 जैसे बड़े आतंकवादी हमले का शिकार हुआ है। आतंकवाद एक वैश्विक चुनौती है जो किसी एक देश की सीमा तक सीमित नहीं है। इसलिए आतंकवाद से लड़ने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग की आवश्यकता है। भारत और अमेरिका इस सच्चाई को महसूस कर रहे है तथा इस दिशा में मिलकर सहयोग के साथ आगे बढ़ रहे हैं। दोनों देश आतंकवाद से लड़ने के लिए साझा रणनीति विकसित की है जैसे–सूचना साझा करना, चरमपंथी संगठनों को आतंकवादी घोषित करना, सैन्य सहयोग बढ़ाकर संयुक्त अभियान चलाना, कूटनीतिक सहयोग का सहारा लेना, दोनों देश अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर आतंकवाद को पोषित करने वाले देशों के लिए मिलकर आवाज उठाते हैं।

आतंकवाद के मुद्दे को लेकर दोनों देशों के मध्य वैचारिक मतभेद भी है जो एक चुनौती के रूप में प्रस्तुत है। जैसे कि पाकिस्तान का मुद्दा, पाकिस्तान को आतंकवाद को पनाह देने का आरोप लगाया जाता है जो अनुभव में सही भी मिला है। पाकिस्तान इस्लामिक आतंकवाद का पोषक रहा है इस तथ्य को 1993 में अमेरिका ने स्वीकार भी किया था। जब उसने पाकिस्तान को आतंकवाद का प्रमुख पोषक देश बताया था। परन्तु अमेरिका कभी–कभी दोहरे मापदण्ड भी अपनाता है। भारत को आतंकवाद में पड़ोसी देशों की भागीदारी को रोकने में अपेक्षित सहयोग अमेरिका द्वारा भारत को नहीं मिला। WTC पर हमले से पहले आतंकवाद के प्रति अमेरिका का रवैया कुछ दूसरा था परन्तु WTC के हमले के उपरान्त आतंकवाद को लेकर अमेरिकी नजरिये में बदलाव आया है और अलकायदा प्रमुख 'बिन लादेन' को शरण देने का आरोप पाकिस्तान पर लगा। इस समय अमेरिका भारतीय नीति से सहमत दिखा। अब चूँकि साइबर आतंकवाद के रूप में आतंकवाद का नया स्वरूप सामने आ चुका है यह दोनों देशों के मध्य साझा चुनौती है।

**ऊर्जा सुरक्षा** – ऊर्जा ससाधनों के कमी को देखते हुए भारत ने अमेरिका के साथ ऊर्जा क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने पर जोर दिया है। भारत ने इस नीति का प्रयोग अमेरिका के बाद पश्चिम एशिया के साथ किया जो कि भारत के लिए तेल और गैस के प्रमुख आपूर्तिकर्ता है। ऊर्जा सुरक्षा के लिए भारत ने रूस के साथ भी समझौता किया हैं वस्तुतः मूल बात यह है कि बदलते वैश्विक परिदृश्य एवं सुदृढ़ आर्थिक विकास के लिए ऊर्जा सुरक्षा भारतीय विदेश नीति का महत्वपूर्ण पक्ष रहा है। उल्लेखनीय बात यह है कि ऊर्जा सुरक्षा अमेरिका के लिए भी एक चिन्ता का विषय है। इसीलिए दोना देश अपनी बढ़ती

हुई ऊर्जा माँ को पूरा करने के लिए नये–नये तरीके खोज रहे है। दूसरी तरफ ऊर्जा सुरक्षा दोनों देश के मध्य संबंध को मजबूत बनाने का एक महत्वपूर्ण कारक हो गया है।

ऊर्जा सुरक्षा किसी देश के न केवल आर्थिक विकास के लिए आवश्यक है वरन् इसका सरोकार राष्ट्रीय सुरक्षा से भी गम्भीर रूप से हैं ऊर्जा की कमी किसी राष्ट्र के सुरक्षा के लिए गम्भीर खतरा उत्पन्न करता है। यह राजनीतिक स्थिरता को प्रभावित करता है। इसी क्रम में भारत और अमेरिका के बीच ऊर्जा सम्बन्ध पिछली कुछ वर्षों में काफी मजबूत हुए है। दोनों देश ऊर्जा के सम्बन्ध में कई क्षेत्र में सहयोग कर रहे हैं। अप्रैल 2018 में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प और भारतीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के निर्देशन में एक S.E.P. स्थापित की गयी जिसमें चार प्राथमिक स्तम्भों की चर्चा की गयी 1–विद्युत और ऊर्जा दक्षता, 2–तेल और गैस, 3–नवीकरण ऊर्जा और 4–सतत् विकास।

उपरोक्त स्तम्भों के माध्यम से अमेरिका और भारत पॉवर ग्रिड को मजबूत और आधुनिक बनाने और स्वच्छ सस्ता तथा विश्वसनीय ऊर्जा का उपयोग करने, दीर्घकालिक ऊर्जा विकास को बढ़ावा देने के लक्ष्य से अनुप्रेरित है। S.E.P. की स्थापना के बाद द्विपक्षीय हाइड्रो कार्बन व्यापार में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। 2017–18 की तुलना में 2019–20 में हाइड्रो कार्बन का व्यापार 93% बढ़ा है। 18 जुलाई 2005 को सम्पन्न भारत–अमेरिका परमाणु समझौता पर जब हम विचार करते हैं तो यह पता चलता है कि भारत के कई शर्त स्वीकार करके ही यह समझौता हुआ है जैसे सी0टी0बी0टी0 पर हस्ताक्षर किये बिना परमाणु सम्पन्न देशों का सहयोग मिलना। यहाँ स्पष्ट होता है कि भारत अपने विदेश नीति का संचालन नेशन फर्स्ट के सिद्धान्त पर ही करता है।

**आर्थिक हित और वैश्विक व्यापार** – भारत की अर्थव्यवस्था तेजी से विकास कर रही है और वैश्विक अर्थव्यवस्था में उसकी हिस्सेदारी निरन्तर बढ़ रही है। भारत ने व्यापार और निवेश दोनों क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। आज भारतीय अर्थव्यवस्था को दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक माना जाता है। भारत का व्यापार दुनिया के कई देशों के साथ बढ़ा है परन्तु अमेरिका उन देशों में प्रमुख है। विगत समय में भारत और अमेरिका के बीच आर्थिक सम्बन्ध काफी मजबूत हुए है। दोनों देशों के आर्थिक हित एक–दूसरे से सम्बद्ध है और वे एक दूसरे के पूरक है। भारत तथा अमेरिका के बीच द्विपक्षीय व्यापार 2022–23 में 128.55 विलियन अमेरिकी डॉलर रहा जो 2021–22 के मुकाबले 7.65% ज्यादा था। वर्तमान समय में भारत अमेरिका का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदारी करने वाला देश है। अमेरिका के पास उन्नत प्रौद्योगिकी क्षमता है तो भारत विनिर्माण की क्षमता से सम्पन्न है।

कई अमेरिकी कम्पनियाँ भारत को एक महत्वपूर्ण बाजार के रूप में देखती है और उन्होंने भारत में विस्तार भी किया है दूसरी तरफ भारतीय निवेशक भी अमेरिकी बाजार में निवेश कर रहे है। भारत ने 2023 तक दो खरब डॉलर निर्यात का लक्ष्य निधारित किया है। दोनों देशों के मध्य द्विपक्षीय व्यापार तेजी से बढ़ रहा हैं भारत चालू खाते घाटे वाली अर्थव्यवस्था से निर्यातोन्मुख अर्थव्यवस्था बनने की राह पर है जिसमें भारत–अमेरिका द्विपक्षीय व्यापार सहायक होता सकता है। अमेरिका–भारत में F.D.I. का छठाँ सबसे बड़ा स्रोत है। भारत तथा अमेरिका व्यापार संबंध के मामले में एक वैश्विक रणनीतिक साझेदार के रूप में उभर रहे है। वैश्विक संकट के बावजूद दोनों देशों के मध्य व्यापार, आर्थिक, रक्षा तथा ऊर्जा सम्बन्धों का तेजी से विकास हो रहा है। भारत एक विश्वसनीय व्यापारिक भागीदार के रूप में उभरा है और वैश्विक कम्पनियाँ चीन पर निर्भरता कम कर भारत के साथ व्यापारिक रिश्ता बना रही है। स्पष्ट है कि माम उतार–चढ़ाव के बावजूद दोनों देशों में व्यापारिक रिश्तों का विकास हुआ है जिसमें भारत अपनी व्यापारिक रणनीति के लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल रहा है।

**निष्कर्षः–**

उपरोक्त अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाता है कि भारत ने सदैव अपनी विदेश नीति के क्रियान्वयन में 'राष्ट्र प्रथम' के मूल सिद्धान्त को सदैव अपाने के लिए प्रतिबद्ध रहा है। चाहे वह महाशक्तियों या अन्य देश रहे हों। जहाँ तक भारत–अमेरिका सम्बन्धों के मध्य भारत द्वारा राष्ट्र प्रथम के विदेश नीति के सिद्धान्त को लागू करने का प्रश्न है तो निःसन्देह यहाँ भी यह सिद्धान्त बहुत हद तक लागू दिखता है। चाहे वह ऊर्जा सम्बन्ध हो, सुरक्षा व सामरिक हित का मामला रहा हो, कश्मीर मुद्दा व वित्तीय सम्बन्ध हो। परन्तु अभी भी दोनों देशों के बीच सहयोग एवं साझेदारी की पर्याप्त सम्भावना है। विशेषकर सुरक्षा, व्यापार और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में। साझा लोकतांत्रिक मूल्यों एवं सामरिक हित और रणनीतिक जरूरतों के चलते भारत–अमेरिका के मध्य सम्बन्ध भविष्य में और मजबूत होने की सम्भावना है। दोनों देशों के व्यापक सम्बन्ध वैश्विक स्तर पर महत्वपूर्ण है। इसीलिए दोनों देशों के राष्ट्र प्रमुख द्वारा द्विपक्षीय सम्बन्धों को मजबूत करने का प्रयास किया जा रहा है। परन्तु इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता है कि दोनों देश के मध्य चुनौतियाँ नहीं ह। दोनों देशों का सम्बन्ध बहुआयामी व जटिल है दोनों देशों के मध्य कुछ मतभेद भी है जैसे–व्यापार युद्ध, बीजा का मुद्दे, मानवाधिकार, प्रौद्योगिकी हस्तान्तरण तथा रूस से नजदीकी के संदर्भ में। लेकिन वहीं पर वैश्विक चुनौतियों जैसे–आतंकवाद और जलवायु परिवर्तन के दृष्टिकोण से दोनों देश के संयुक्त प्रयास की आवश्यकता भी है। दोनों देशों के बीच विकसित होते रिश्ते 21वीं सदी के वैश्विक व्यवस्था को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते है।

## सन्दर्भ


1. O.R.F. Author Sameer Patil, July, 209, 2023
2. डॉ0 मदन कुमार वर्मा, भारत–अमेरिका सम्बन्ध–2021
3. दैनिक जागरण 25.05.2018
4. बदलती दुनिया में भारत की विदेश नीति–बी0पी0 दत्त
5. जनसत्ता, नई दिल्ली, 01 जुलाई, 2023
6. द इकोनामिस्ट